श्री दिगम्बर जैन मन्दिर बगरूवालान, जयपुर

सहस्त्रकूट जिनालय

अरहंत तीर्थंकरों के शरीर में १००८ सुलक्षण होते हैं अतः तीर्थंकरों को १००८ नामों से पुकारते हैं। इस एक-एक नाम के लिये एक-एक वास्तु कला में १००८ बिम्ब एक स्थान पर विराजमान किये जाते हैं। जिसे सहस्त्रकूट जिनालय कहा जाता है।

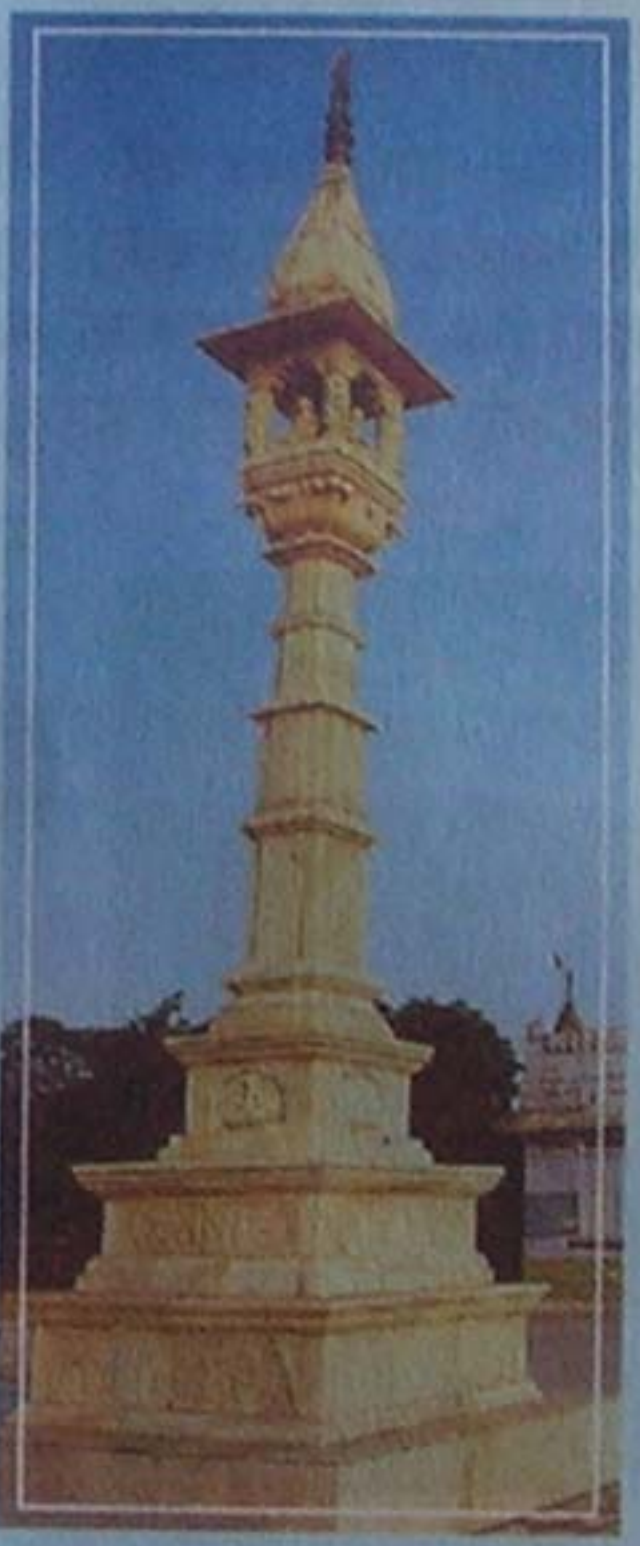

मान स्तम्भ का महात्म्य

जैनागम के अनुसार जब भगवान का साक्षात समवशरण लगता है तब चारों दिशाओं में चार मान स्तम्भ स्थापित किये जाते हैं। और मान स्तम्भ में चारों दिशाओं में एक एक प्रतिमा स्थापित की जाती है। अर्थात एक मान स्तम्भ में कुल चार प्रतिमायें होती हैं। इस मान स्तम्भ को देखकर मिथ्या दृष्टियों का मद (अहंकार) गल जाता है। और भव्य जीव सम्यग्दृष्टि होकर समवसरण में प्रवेश कर साक्षात् अरिहंत भगवान की वाणी को सुनने का अधिकारी बन जाता हैं।